केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

डी-०१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५००४

पद्म श्री पुरस्कार

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर एक प्रख्यात हिंदी विद्वान और 42 वर्षों तक केरल हिंदी साहित्य अकादमी , तिरुवनंतपुरम, केरल के संस्थापक अध्यक्ष रहे थे। डॉ. नायर 10 जनवरी 2022 (विश्वहिंदी दिवस) को 99 वर्ष की आयु में ब्रह्मलीन हो गये।

डॉ एन .चन्द्रशेखरन नायर तिरुवनंतपुरम के महात्मा गांधी कॉलेज में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष थे। डॉ नायर यु जी सी के मेजर रिसर्च फेलो रहे थे ।1976–2010 के दौरान, डॉ. नायर को केंद्र सरकारको विभिन्न मंत्रालयों की 14 हिंदी सलाहकार समितियों में सलाहकार के रूप में नामित किया गया था।1989–93 के दौरान डॉ. नायर को केरल के राज्यपाल द्वारा केरल विश्वविद्यालय में सेनेटर के रूप में नामित किया गया था। उन्होंने हिंदी प्रचार के लिए कई अन्य अकादमिक समितियों के अलावा हिंदी पाठ्यपुस्तक समिति के अध्यक्ष के रूप मेंभी कार्य किया और केरल के कई प्रांतों में एनएसएस कॉलेजों के हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी रहे थे।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। ओट्टपालम, पालघाट में, उन्होंने गांधीवादी जीवन शैली और उनके सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज की स्थापना की। उन्हें गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष के रूप मेंभी नामित किया गया था।

डॉ. एन .चन्द्रशेखरन नायर का जन्म शास्तांकोट्टा, कोल्लम, केरल में एक मध्य वर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करके हाई स्कूलों में 4 साल पढ़ाने के बाद, डॉ. एन सी नायर 1951 में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हिंदी प्राध्यापक बन गये। डॉ. नायर ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए तथा बिहार विश्व विद्यालय से पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

डॉ. नायर एक प्रखर गांधीवादी थे, जो हिंदी प्रचार–प्रसार को अपना धर्म और गांधीजी के प्रति अपनी भक्ति मानते थे। डॉ नायर भारत के गैर–हिंदी भाषी दक्षिणी राज्य, केरल में राष्ट्रीय एकता के लिए अपने कर्म के रूप में हिंदी का प्रचार–प्रसारकरने में संलग्न रहे थे। 16 साल की उम्र में भी वह केरल के विभिन्न हिस्सों के ग्रामीण इलाकों में हिंदी पढ़ाते थे। डॉ एन सी नायर ने साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी अध्ययन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए 1980 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना की। पिछले 42 वर्षों से, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी संगोष्ठियाँ और कार्यशालाओं का आयोजन करके, उच्च गुणवत्ता वाले शोध के लिए प्रकाशन और त्रैमासिक पत्रिका शोध पत्रिका निकालकर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभारही है । अकादमीहिंदी साहित्य और अनुसंधान के क्षेत्र में पूरे भारत की हस्तियों को सम्मानित कररही है। अकादमी पुरस्कार ,अच्छे हिंदी प्रकाशन निकालने के लिए युवाओं का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, आदि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रही है । डॉ. नायर ने अपने भवन में एक संसाधनपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया था जो शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध है। छात्रों और अन्य शोधकर्ताओं को अपने शोध और शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए यह पुस्तकालय सदा कर्मरत है। डॉ नायर के मार्गदर्शन में छह शोधार्थियों ने पीएचडी प्राप्त की है। समय के साथ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने केरल में हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल बनाया। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनुदान प्राप्त है। अकादमी 180 से अधिक हिंदी लेखकों, विशेषकर भारत के विभिन्न हिस्सों के युवा लेखकों को सम्मानित किया है। अकादमी के प्रकाशन, विशेषकर शोध पत्रिका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर ने उच्च स्तरीय हिन्दी पी.एच.डी. शोध प्रबंध के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की। 2018 में पहला पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार जो 50000/– रुपये का है, इसमें प्रशस्ति पत्र और प्रमाण पत्र हर साल दिया जाता है। आपने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ प्रबंध प्रस्तुति के लिए स्कूली छात्रों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए।

डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम के बहुभाषी लेखक थे। आप एक सफल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, शोध निदेशक, चित्रकार, आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। डॉ. नायर ने हिंदी में 50 से अधिक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कई पुस्तकों को भारतीय विश्वविद्यालयों ने पाठ्यपुस्तकों के रूप में चुन ली है। विख्यात लेखकों की अनेक सुप्रसिद्ध कृतियों की आलोचना भी प्रस्तुत की है। भारत और विदेशों में 800 से अधिक पत्रिकाओं में डॉ नायर के लेख प्रकाशित हो गये । यौगिक जीवन जीने वाले डॉ. नायर ने उपनिषद, अध्यात्म रामायण, चिरंजीव , राम–मारुति मिलन, राम की स्तुतियाँ, श्री ललिता सहस्रनाम व्याख्याएँ आदि जैसे महान ग्रन्थों पर आधारित कई धार्मिक प्रकाशन कार्य किये थे। डॉ. एन सी नायर ने सौ से अधिक पेंटिंग बनाई थीं। स्वागत जैसी इंडियन एयरलाइंस पत्रिका में डॉ. नायर की कई चित्र प्रकाशित हुईं। उनकी कई चित्र तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में प्रदर्शित हुए।

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर को 12 सितंबर, 2015 को भोपाल में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्व गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह से षवेंश्व हिंदी सम्मान प्राप्त हुआ। उनके जीवनकाल के योगदान को मान्यता देते हुए पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने डॉ. नायर को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। डॉ. नायर को 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में भी सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया था।

2020 में, डॉ. चंद्रशेखरन नायर को हिंदी भाषा, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में उनकी असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए यूको बैंक द्वारा यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान (वर्ष 2019–20) से सम्मानित किया गया था। 2018 में, डॉ. नायर को पीएसयू/नवरत्नों द्वारा टोलिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 2014 में डॉ. नायर को हिंदी भवन, नई दिल्ली द्वारा षष्हिंदी रत्नसम्मान और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा देशरत्न से सम्मानित किया गया। डॉ. नायर को 2004–05 के लिए गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी लेखकों के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार मिला। उन्हें 2005 में भारत के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से 1 लाख रुपये का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार, षणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान और 2008 में महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को कई प्रमुख भारतीय हस्तियों जैसे स्वर्गीय श्री नरसिम्हा राव, पूर्व वित्त मंत्री, वित्त मंत्री, भारत सरकार, महामहिम श्री बी राचौया, केरल के पूर्व राज्यपाल और श्री लाल कृष्ण आडवाणी, से अभिनंदन ग्रंथ प्राप्त हुआ। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को मदन मोहन मालव्य, विवेकानन्द, प्रेमचंद, एजुथाचन, केशवदेव कवि मुल्ला दाऊद, महर्षि विद्याधि राजा, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी आदि जैसे भारतीय विद्वानों और नेताओं के नाम पर पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता थे। उन्हें प्रतिष्ठित संगठनों/संस्थानों द्वारा स्थापित कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और पुरस्कार प्राप्त हुए। 2020 में, डॉ एन चंद्रशेखरन नायर को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान और सेवा की मान्यता के रूप में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के जीवन–विजय के पीछे उनकी अर्धांगिनी श्रीमती टी.शारदा जी का बड़ा योगदान रहा है। वे केरल के सुविख्यात सर्वोदय नेता प्रो.एम.पी.मन्मथन की सुपुत्री हैं। उनके तीन संतानें हैं बड़ा बेटा श्री सी शरतचन्द्रन (दिवंगत) दो बेटियाँ श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन तथा डॉ. एस. सुनंदा।डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थे। ओट्टपालम, पालघाट में, उन्होंने गांधीवादी जीवन शैली और उनके सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज की स्थापना की। उन्हें गांधी शताब्दी समिति के अध्यक्ष के रूप मेंभी नामित किया गया था।

डॉ. एन .चन्द्रशेखरन नायर का जन्म शास्तांकोट्टा, कोल्लम, केरल में एक मध्य वर्गीय परिवार में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करके हाई स्कूलों में 4 साल पढ़ाने के बाद, डॉ. एन सी नायर 1951 में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हिंदी प्राध्यापक बन गये। डॉ. नायर ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए तथा बिहार विश्व विद्यालय से पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं।

डॉ. नायर एक प्रखर गांधीवादी थे, जो हिंदी प्रचार–प्रसार को अपना धर्म और गांधीजी के प्रति अपनी भक्ति मानते थे। डॉ नायर भारत के गैर–हिंदी भाषी दक्षिणी राज्य, केरल में राष्ट्रीय एकता के लिए अपने कर्म के रूप में हिंदी का प्रचार–प्रसारकरने में संलग्न रहे थे। 16 साल की उम्र में भी वह केरल के विभिन्न हिस्सों के ग्रामीण इलाकों में हिंदी पढ़ाते थे। डॉ एन सी नायर ने साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी अध्ययन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए 1980 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी की स्थापना की। पिछले 42 वर्षों से, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी संगोष्ठियाँ और कार्यशालाओं का आयोजन करके, उच्च गुणवत्ता वाले शोध के लिए प्रकाशन और त्रैमासिक पत्रिका शोध पत्रिका निकालकर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभारही है । अकादमीहिंदी साहित्य और अनुसंधान के क्षेत्र में पूरे भारत की हस्तियों को सम्मानित कररही है। अकादमी पुरस्कार ,अच्छे हिंदी प्रकाशन निकालने के लिए युवाओं का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, आदि कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभा रही है । डॉ. नायर ने अपने भवन में एक संसाधनपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया था जो शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध है। छात्रों और अन्य शोधकर्ताओं को अपने शोध और शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए यह पुस्तकालय सदा कर्मरत है। डॉ नायर के मार्गदर्शन में छह शोधार्थियों ने पीएचडी प्राप्त की है। समय के साथ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने केरल में हिंदी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल माहौल बनाया। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा अनुदान प्राप्त है। अकादमी 180 से अधिक हिंदी लेखकों, विशेषकर भारत के विभिन्न हिस्सों के युवा लेखकों को सम्मानित किया है। अकादमी के प्रकाशन, विशेषकर शोध पत्रिका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर ने उच्च स्तरीय हिन्दी पी.एच.डी. शोध प्रबंध के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की। 2018 में पहला पुरस्कार प्रदान किया। पुरस्कार जो 50000/– रुपये का है, इसमें प्रशस्ति पत्र और प्रमाण पत्र हर साल दिया जाता है। आपने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ प्रबंध प्रस्तुति के लिए स्कूली छात्रों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए।

डॉ एन चन्द्रशेखरन नायर हिंदी और मलयालम के बहुभाषी लेखक थे। आप एक सफल कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, शोध निदेशक, चित्रकार, आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। डॉ. नायर ने हिंदी में 50 से अधिक मौलिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कई पुस्तकों को भारतीय विश्वविद्यालयों ने पाठ्यपुस्तकों के रूप में चुन ली है। विख्यात लेखकों की अनेक सुप्रसिद्ध कृतियों की आलोचना भी प्रस्तुत की है। भारत और विदेशों में 800 से अधिक पत्रिकाओं में डॉ नायर के लेख प्रकाशित हो गये । यौगिक जीवन जीने वाले डॉ. नायर ने उपनिषद, अध्यात्म रामायण, चिरंजीव , राम–मारुति मिलन, राम की स्तुतियाँ, श्री ललिता सहस्रनाम व्याख्याएँ आदि जैसे महान ग्रन्थों पर आधारित कई धार्मिक प्रकाशन कार्य किये थे। डॉ. एन सी नायर ने सौ से अधिक पेंटिंग बनाई थीं। स्वागत जैसी इंडियन एयरलाइंस पत्रिका में डॉ. नायर की कई चित्र प्रकाशित हुईं। उनकी कई चित्र तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में प्रदर्शित हुए।

डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर को 12 सितंबर, 2015 को भोपाल में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्व गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह से षवेंश्व हिंदी सम्मान प्राप्त हुआ। उनके जीवनकाल के योगदान को मान्यता देते हुए पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने डॉ. नायर को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया। डॉ. नायर को 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में भी सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया था।

2020 में, डॉ. चंद्रशेखरन नायर को हिंदी भाषा, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में उनकी असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए यूको बैंक द्वारा यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान (वर्ष 2019–20) से सम्मानित किया गया था। 2018 में, डॉ. नायर को पीएसयू/नवरत्नों द्वारा टोलिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 2014 में डॉ. नायर को हिंदी भवन, नई दिल्ली द्वारा षष्हिंदी रत्नसम्मान और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा देशरत्न से सम्मानित किया गया। डॉ. नायर को 2004–05 के लिए गैर–हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी लेखकों के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार मिला। उन्हें 2005 में भारत के दिवंगत पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम से 1 लाख रुपये का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार, षणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान और 2008 में महाराष्ट्र हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को कई प्रमुख भारतीय हस्तियों जैसे स्वर्गीय श्री नरसिम्हा राव, पूर्व वित्त मंत्री, वित्त मंत्री, भारत सरकार, महामहिम श्री बी राचौया, केरल के पूर्व राज्यपाल और श्री लाल कृष्ण आडवाणी, से अभिनंदन ग्रंथ प्राप्त हुआ। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को मदन मोहन मालव्य, विवेकानन्द, प्रेमचंद, एजुथाचन, केशवदेव कवि मुल्ला दाऊद, महर्षि विद्याधि राजा, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी आदि जैसे भारतीय विद्वानों और नेताओं के नाम पर पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर कई पुरस्कारों और सम्मानों के प्राप्तकर्ता थे। उन्हें प्रतिष्ठित संगठनों/संस्थानों द्वारा स्थापित कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और पुरस्कार प्राप्त हुए। 2020 में, डॉ एन चंद्रशेखरन नायर को साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान और सेवा की मान्यता के रूप में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक, पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के जीवन–विजय के पीछे उनकी अर्धांगिनी श्रीमती टी.शारदा जी का बड़ा योगदान रहा है। वे केरल के सुविख्यात सर्वोदय नेता प्रो.एम.पी.मन्मथन की सुपुत्री हैं। उनके तीन संतानें हैं बड़ा बेटा श्री सी शरतचन्द्रन (दिवंगत) दो बेटियाँ श्रीमती नीरजा राजेन्द्रन तथा डॉ. एस. सुनंदा।

PADMA SHRI DR. N. CHANDRASEKHARAN NAIR

Padma Shri Dr N Chandrasekharan Nair was an eminent Hindi Scholar and the Founder and Chairman of the Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA),Thiruvananthapuram, Kerala for 42 years. Dr Nair passed away at the age of 99 years on 10th January 2022 (Vishwa Hindi Divas).

Dr N Chandrasekharan Nair was the former Head of the Department of Hindi at Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram. Dr Nair was Awarded D.Lit., Major Research Fellow of U.G.C and Emeritus Professor of U.G.C. During 1976-2010, Dr. Nair was nominated in 14 Hindi SalahkarSamitees of various Central Government Ministries as "Salahkar" (Advisor) to the Ministers, Govt. of India. During 1989-93 Dr Nair was nominated as a "Senator" to the University of Kerala by the Governor of Kerala. He served as the Chairman of the Hindi Text Book Committee besides so many other academic Committees for Hindi Promotion and was also the Head of the Hindi Department of NSS Colleges in many parts of Kerala.

Dr. N. Chandrasekharan Nair (Dr N C Nair) was actively involved in social activities. In Ottapalam, Palghat, he established Gandhi Vigyan Bhavan and Bharat YuvakSamaj to promote the Gandhian way of life and his principles. He was nominated as the Chairman of the Gandhi Centenary Committee.

Dr N C Nair was born in Sasthamkotta, Kollam, Kerala in a middle-class family. After completing his studies and 4 years of teaching in high schools, Dr N C Nair joined as a Lecturer in Hindi at the Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram in 1951. Dr Nair got M.A. Degree in Hindi from Banaras Hindu University and a Ph.D. from Bihar University. Dr. Nair pursued vigorously both academics as well as his literary works along with a routine teaching career in the colleges for more than 3 decades.

Dr Nair was a strong Gandhian, who took Hindi Propagation as his Dharma and his devotion to Gandhiji. For 77 years, he has promoted Hindi in a non-Hindi-speaking Southern State of India, Kerala as his mission for National Integration. Even at the age of 16, he used to teach Hindi in rural villages in different parts of Kerala.Dr N C Nair established the Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA) in 1980 to promote Hindi studies and national integration through literary and cultural activities. For the last 43 years, KHSA has been playing a proactive role in promoting the Hindi language by organising Seminars and workshops, bringing out Publications & Periodical Magazine "SodhaPathrika" undertaking high-quality Research, honouring personalities all over India in Hindi literature and Research with Awards and Recognitions, training and capacity building of youth in bringing out good Hindi publications, etc. Dr Nair had instituted a resourceful library in his house which is enabling Ph.D. students and other researchers to pursue their research and academics. Six Professors have obtained Ph.D. Degrees in the works of Dr N C Nair. Over a period of time, KHSA created a congenial atmosphere for the promotion of Hindi Literature in Kerala. KHSA has been recognised by the Central Hindi Directorate through Grants. It has honoured more than 180 Hindi writers, especially youth from different parts of India. Academy's publications, especially the periodical "ShodhPatrika" are nationally and internationally renowned.

Dr N Chandrasekharan Nair instituted an Award for the best Hindi Ph.D. Thesis in Kerala in 2018. The Award which is of Rs 50000/-, Citation and Certificate is given every year. He also instituted Cash Awards to school students for their best performance in Hindi.

Dr N Chandrasekharan Nair was a prominent writer both in Hindi and Malayalam. He was renowned as a Poet, Novelist, Dramatist, Story writer, Research Scholar, A well-known artist in painting and a critic in both the art subject and literary field. Dr Nair has written more than 50 original books in Hindi. Many of his books have been selected as textbooks by the Indian Universities. Gave "Preface" to many well-known works of noted writers. Dr Nair published articles in more than 800 periodicals in India and abroad. Dr Nair who was leading a Yogic life had many religious publications and works based on Upanishad, great epics like AdhyatmaRamayan, Chiranjeevi, Ram-Maruti Milan, Praises of Ram, Sree Lalitha SahasranamVyakhyaye, etc. Dr N C Nair had drawn more than a hundred paintings. A number of paintings of Dr. Nair were published in Indian Airlines magazines like Swagath. Many of his paintings were exhibited at Thiruvananthapuram and New Delhi.

Dr N Chandrasekharan Nair was the recipient of numerous awards and honours. He received several National and State Awards and Awards instituted by Eminent Organisations / Institutions. In 2020, Dr N Chandrasekharan Nair was conferred one of the highest civilian honours of India, "Padma Shri" as a recognition of his distinguished contribution and service in the field of Literature and Education.

Dr N C Nair received the prestigious "Vishva Hindi Samman" from the former Home Minister, Shri Rajnath Singh at the 10th Vishva Hindi Samelan hosted by the Ministry of External Affairs, Government of India in Bhopal on September 12th, 2015. Recognizing his lifetime contribution to the propagation of Hindi all over the world, the Ministry of External Affairs – Government of India conferred the Vishva Hindi Samman to Dr Nair. Dr Nair was also honoured and awarded at the third World Hindi Conference held in 1983 in New Delhi.

In 2020, Dr Chandrasekharan Nair was honoured by the UCO Bank by awarding UCO BharathiyaBhashaSouhardSamman (Year 2019-20) for his exceptional and distinguished service in promoting the Hindi language, literature and education. In 2018, Dr Nair was honoured by PSUs / Navaratnas with the TOLIC Award. In 2014, Dr Nair was awarded "Hindi RatnaSamman" by the Hindi Bhawan, New Delhi and "DeshRatna" by the Uttar Pradesh Government. Dr Nair received the Ministry of Human Resource Development's award for Hindi writers in non-Hindi speaking areas for 2004-05. He received the prestigious national award, "Ganesh Shankar VidyarthiSamman" of Rs 1 lakh from the late former President of India, Dr A P J Abdul Kalam in 2005 and the Maharashtra Hindi Sahitya Academy award in 2008.

Dr N Chandrasekharan Nair received "AbhinandanGrandhas" from many prominent Indian personalities like the Late Sri Narasimha Rao, Former Finance Minister, Minister of Finance, Govt of India, His Excellency, Mr B Rachaiah, Former Governor of Kerala and Sri Lal Krishna Advani, Former Minister for Communication, Govt of India. Dr N Chandrasekharan Nair was given awards in the name of Indian scholars and leaders like Madan Mohan Malavya, Vivekananda, Premchand, Ezhuthachan, Kesavasuth, Poet Mulla Dawood, Maharshi Vidhyadhi Raja, Sri Ganesh Shankar Vidhyarthi, etc.

Behind the success of Dr. N. Chandrasekharan Nair's life, his wife late Smt. T. Sarada has made a big contribution. She was the daughter of late Sarvodaya leader of Kerala, Prof M. P. Manmathan. They have three children: elder son, Mr C. Sarat Chandran (late), two daughters, Mrs. Neeraja Rajendran and Dr. S Sunanda.

विश्व हिन्दी सम्मान

गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान

हिन्दीरत्न सम्मान

जय हिन्दी!
हिन्दी भवन

हिन्दी भवन सभागार

जय हिन्दी!
जय नागरी!!
हिन्दी भवन

केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त (सीवीसी)
विशिष्ट अतिथि
संध्या : 5:30 बजे
हिन्दी भवन

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

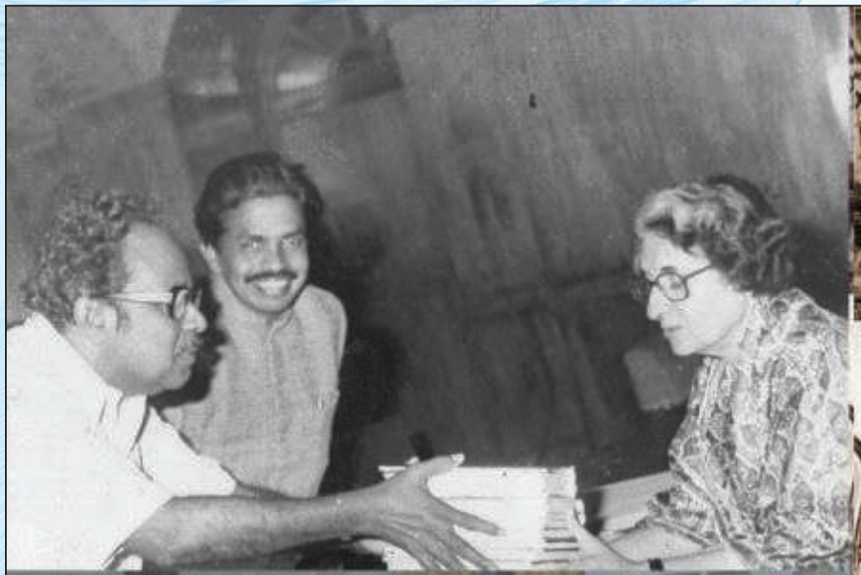

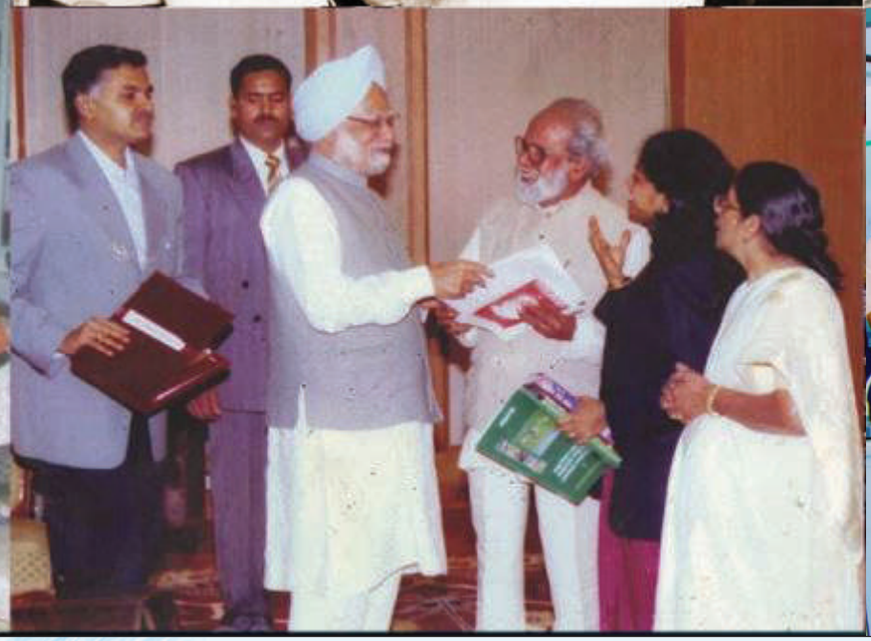

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त अन्य पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को प्राप्त पुरस्कार

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार समर्पण

2018

2019

2020

2021

2022

2023

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषणा पुरस्कार केरल के विश्वविद्यालयों से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंधों में से सर्वश्रेष्ठ हिन्दी शोध प्रबंध के लिए पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर (संस्थापक – पूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) द्वारा दिया जाने बाला पुरस्कार है। 50,000 रुपये, स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र का यह पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। वर्ष 2018 से यह पुरस्कार प्रदान दिया जा रहा है।

39-ാം വാർഷിക

39-ാം വാർ

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का पुस्तक विमोचन

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका

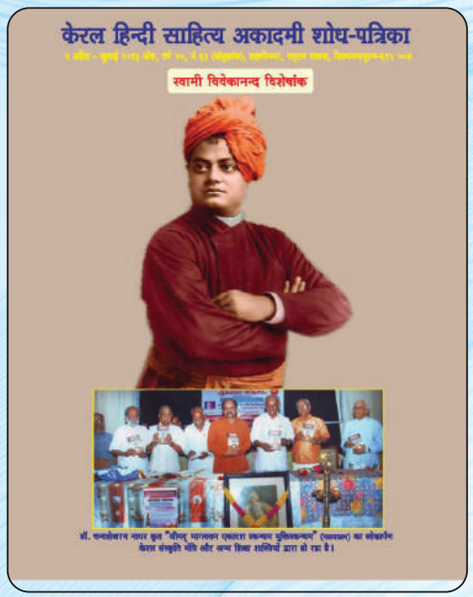

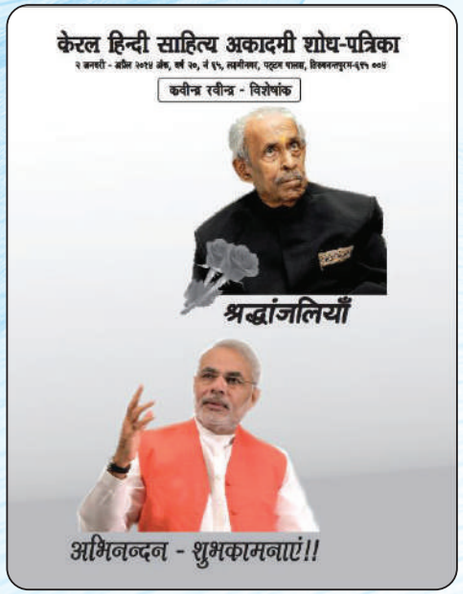

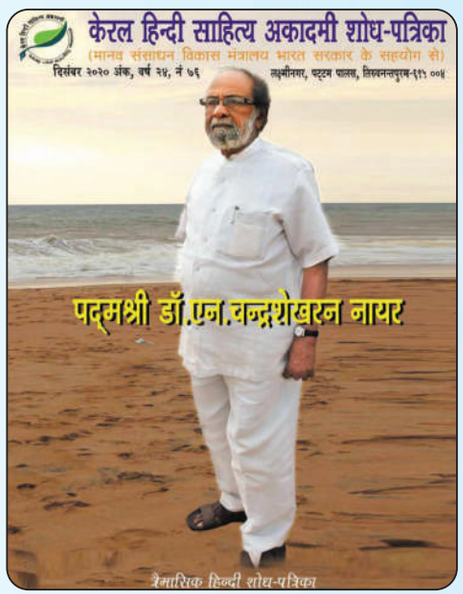

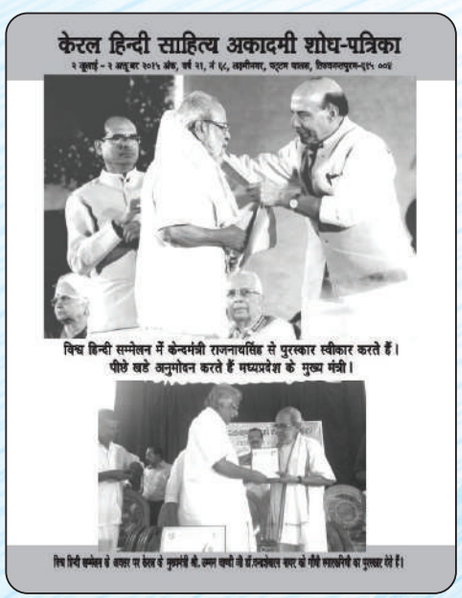

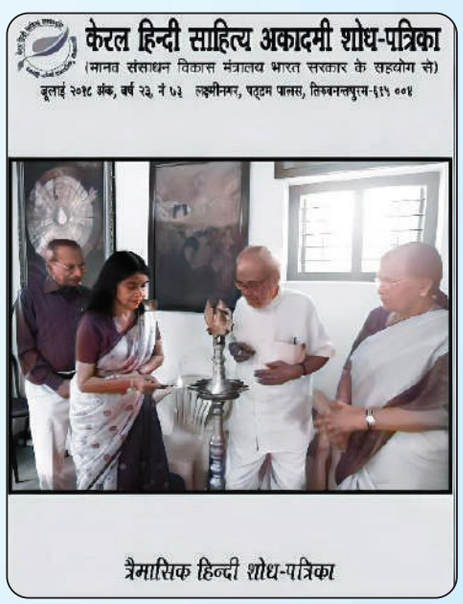

डॉ.एन.सी नायर की चित्रकला

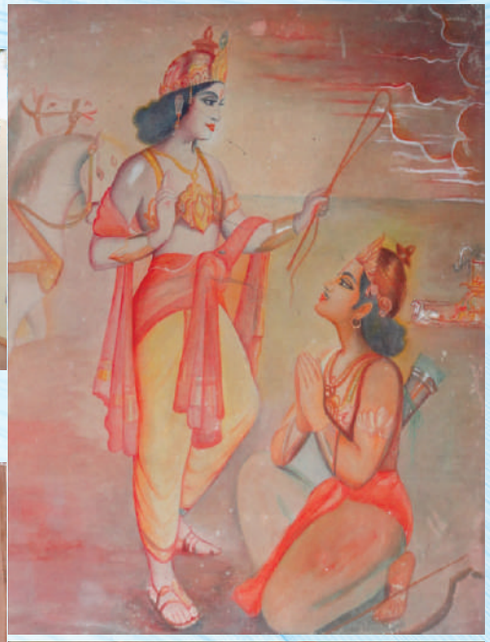

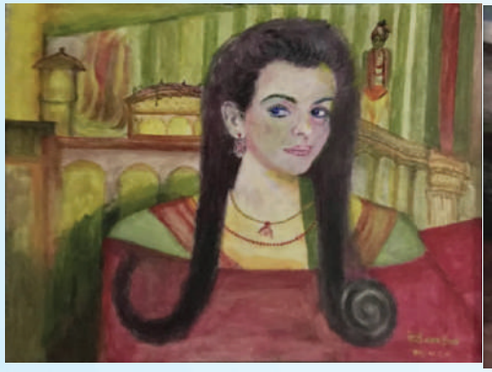

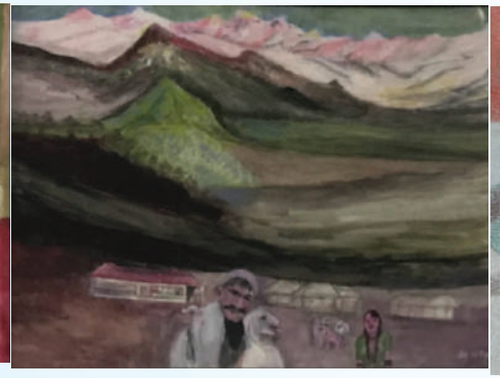

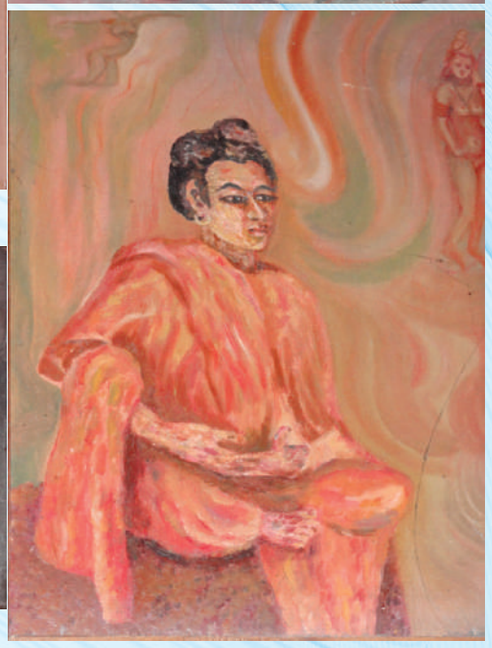

डॉ.एन.सी नायर की चित्रकला

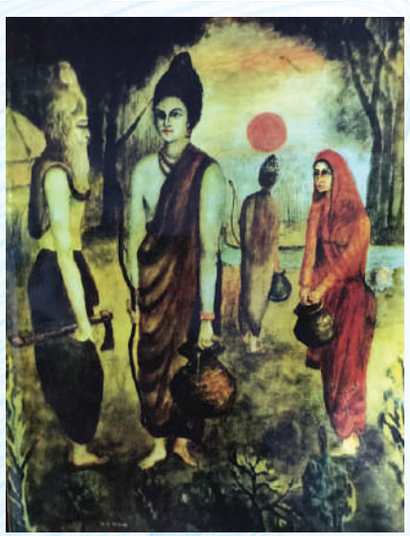
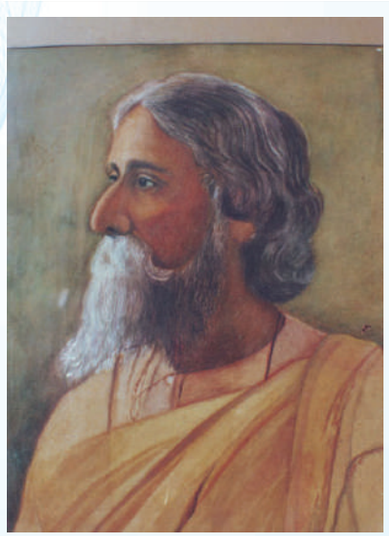

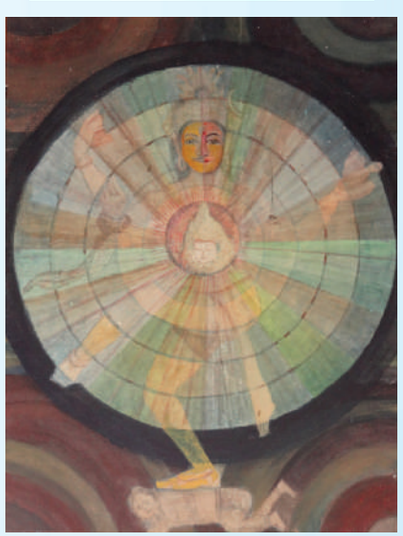

केरल हिंदी साहित्य अकादमी भवन की जैत्र यात्रा ज़ारी है!!

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी समूचे दक्षिण भारत में ही इसप्रकार की एकमात्र पंजीकृत संस्था है। देशीय एवं भावात्मकएकता को लक्ष्य में रखकर डा० एन० चन्द्रशेखरन नायर जी ने एक संस्था की संकल्पना की और अपने नेतृत्वमें इसकी स्थापना की । इसकी नियमावली में उपर्युक्त लक्ष्य के अनुकूल अनेक प्रकार के कार्यकलापों की ओर इंगितकिया गया है, जैसे भाषाई एवं सांस्कृतिक एकता को रख सकने योग्य पुस्तकों का रचना निर्माण एवं प्रकाशन करना,हिन्दीतर प्रदेशों में रचे हिन्दी ग्रंथों की प्रदर्शिनियों का आयोजन करना,दक्षिणभाषाओं में रचे गये श्रेष्ठ एवं उत्तम ग्रंथों काशोधात्मक अध्ययन कराने का प्रबंध करना, भाषाई एवं सांस्कृतिक सम्मेलनों और सेमिनारों का आयोजन करना, तुलनात्मकअध्ययन में लगे हुए अकादमी के सदस्यों को प्रोत्साहन देना,दक्षिण के हिन्दी साहित्यकारों को उनकी योग्यता के अनुसारप्रोत्साहन एवं अवार्ड देना और उनका आदर–सम्मान करना, दक्षिण के ऐसे हिन्दी साहित्यकारों को श्रेष्ठ साहित्यिकउपाधियाँ प्रदान करनाय अकादमी की तरफ से मुद्रणालय की व्यवस्था करना, बहुभाषा या द्विभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशनकरना, सांस्कृतिक अभियान में लगे हुए अकादमी के सदस्यों को प्रोत्साहन देना, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक यात्रा केलिएवित्तीय सहायता देना, सहकारिता के आधार पर दक्षिण की भाषाओं के बीच में सांस्कृतिक अध्ययन करने देना, भारतीयभाषाओं में रचे श्रेष्ठ ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद करना और उनका प्रकाशन करना, उदीयमान युवा लेखकों की रचनाओंको प्रोत्साहन देना और उनकी रचनाओं को सहकारिता के बल पर प्रकाशित करना इत्यादि ।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का पंजीकरण 15 जून 1982 में हुआ था। इसके दो साल पहले से केरल हिंदी साहित्य परिषद् के नाम से जो संस्था कार्य–निरत थी और अनेक प्रकार के कार्यकलाप चलाती जा रही थी। वह 1982 में केरल हिंदी साहित्य अकादमी के नाम से पंजीकृत हुई है। परिषद् का औपचारिक उद्घाटन केरल के मुख्य मंत्री श्री. ई.के.नायनार द्वारा हुआ था। परिषद् ने कई बार हिंदी और मलयालम की साहित्यिक गति–विधि पर लगभग शताधिक चर्चाएँ की हैं, जिनमें केरल केऔर हिंदी के अनेक मूर्द्धन्य साहित्यकारों ने भाग लिया था। अनेक साहित्यिक सेमिनार भी चलाये। परिषद् के सदस्यों के रचे गए ग्रंथों का धूमध ाम से विमोचन हुआ था। केरल के महाकवि श्री.एम.पी. अप्पन की मलयालम कविताओं का हिंदी में अनुवाद करके "गौरीशंकर' नाम से प्रकाशित किया। प्रस्तुत ग्रंथ का अनुवाद परिषद् के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी ने किया और उसका विमोचन नयी दिल्ली में केन्द्र परिवहन मंत्री श्री. वीरेन्द्र पाटीलजी द्वारा हुआ। केरल के प्रख्यात उपन्यासकार श्री.एम.टी.वासुदेवन नायर का मलयालम उपन्यास "मञ्ञु' का हिंदी में अनुवाद अकादमी की सदस्या श्रीमती हफसत सिद्दीकी ने किया। उसका धूमधाम से विमोचन नयी दिल्ली में श्रीरामचन्द्र भरद्वाज द्वारा आयोजित संसद सदस्यों के साहित्यकारों की सभा में केन्द्रमंत्री श्री.सीताराम केसरी जी ने किया।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का औपचारिक उद्घाटन केरल के मुख्यमंत्री श्री.के.करुणाकरन जी ने किया और प्रथम वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री जियाउर रहमान अनजारीजी ने उसी मंच पर किया।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी अपने निश्चित उद्देश्य और कार्यक्रमों पर बराबर प्रयत्नशील है। कई ग्रंथों का प्रकाशन किया, जिनमें "समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य'. "हम सूरज के बेटे' (ञङ्ङल सूर्यन्टे मक्कल) 'सिंबोलिक कवि जी.शंकर कुरुप',"केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास',"दक्षिण के प्रतिनिधि हिंदी साहित्यकार डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर',"सीतम्मा', नामक उपन्यास,"कविताएँ देशभक्ति की', केरल की हिंदी कविताएँ, "देवयानी' नामक नाट्य–रचना का संस्कृत में केरल के मूर्धन्य संस्कृत पंडित श्री.एम.एच.शास्त्री द्वारा अनुवाद एवं मुद्रण, श्री.शिवरामय्यर द्वारा महाकवि उल्लूर और वल्लत्तोल के काव्यों का अनुवाद और "त्रिवेणी' नाम से प्रकाशन आदि ख्याति प्राप्त ग्रंथ हैं। केन्द्र सरकार ने इन ग्रंथों का थोक परचेस किया।

प्रतिवर्ष दक्षिण के प्रसिद्ध साहित्यकारों को उनकी कृतियों के आधार पर अकादमी पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देती आ रही है।

केरल हिंदी साहित्य अकादमी भवन

केरल हिंदी साहित्य अकादमी भवन की जैत्र यात्रा ज़ारी है!!

केरल हिंदी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका

अकादमी की मुख पत्रिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका सन् १९९६ से अकादमी चेयरमैन एन.चन्द्रशेखरन नायर के मुख्य संपादकत्व में सुचारू रूप में चली आ रही है। यह पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग सेनिकल रही है। पिछले चौबीस वर्षों के भीतर अकादमीने देश के दस से अधिक ग्रंथकारों की रचनाएँ प्रकाशित की हैं।

केरल के उच्चन्यायालय के भूतपूर्व जस्टिस एम.आर.श्री.हरिहरन नायर अकादमी के संरक्षक हैं। ख्यातिप्राप्त लेखिका एवं केरल विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग की भूतुपूर्व अध्यक्षा डॉ.एस.तंकमणि अम्मा अकादमी की अध्यक्षा हैं तथा डॉ.एस.सुनंदा अकादमी की महासचिव हैं।

पिछले 43 सालों से केरल हिन्दी साहित्य अकादमीने हिन्दी केलिए जो सेवा अर्पित की वह बहुमूल्यवान रहीहै । अकादमी के प्रारम्भ से अब तक जितनी प्रगति एवं अभिवृद्धि हुई है, उसका एकदम वर्णन करना असंभव है। अकादमी को आज अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हो गयी है । स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसका विशेष आदर है । मुख्यतः शोध पत्रिका ने भारत की संस्कृति एवं जन–जीवन पर आधारित विषयों पर ध्यान दिया है। पूरे देशकी साहित्यिक मनस्थिति शोध पत्रिका में शामिल है।

डॉ.पद्मश्री चन्द्रशेखरन नायर (दिवंगत) की क्रांतदर्शिता और संगठन–कुशलता ने अकादमी के कार्यकलापों को उच्च स्तर का बनाया है। हर साल वे नयी खोज को लेकर अवतरित होते हैं। सन् 2018 से एक नया कार्यक्रम उन्होंने शुरू किया है कि केरल के विश्वविद्यालयों से हिंदी में पीएच.डी उपाधि प्राप्त शोद सप्रबंधों से सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध का चयनकर उसे पचास हजार (50000) रुपये का "डॉ.चन्द्रशेखरन नायर हिंदी गवेषण पुरस्कार'' देने का शुभारंभ हुआ है। सन् 2018 में सर्वप्रथम यह पुरस्कार एन.एस.एस. हिंदु कॉलेज, चंगनाश्शेरी के हिंदी विभाग की सह आचार्या डॉ.रेणु.एस और सन् 2019 में यह पुरस्कार अंकमाली महाकवि जी मेम्मोरियल एन.एस.एस. की अध्यापिका डॉ.रेमी को मिल गया। 2020, 2021 तथा 2022 के पुरस्कार डॉ.सुप्रिया.के.वी., डॉ.के.वी.रंजिता राणि तथा ड़ॉ.लक्ष्मी.एस.नायर को मिले हैं। नयी पीढ़ी के हिंदी शोधार्थियों को प्रोत्साहित कर हिंदी भाषा का सर्वागीण विकास करने की दिशा में यह एक शुरुआत है।

10 जनवरी 2022 को डॉ.नायर के निधन बाद नई कार्यकारिणी समिति के नेतृत्व में अकादमी के कार्यकलाप चल रहे हैं। दिसंबर 2022 को डॉ.रंजीत आर.एस. रविशैलम के संपादकत्व में "श्री चन्द्रशेखरम्'' शीर्षक से पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन जो हुआ, वह अकादमी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है तथा संस्थापक अध्यक्ष के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि भी

केरल हिंदी साहित्य अकादमी की जैत्र यात्रा जारी है!!

केरल हिंदी साहित्य अकादमी कार्यक्रम

केरल हिंदी साहित्य अकादमी कार्यक्रम

केरल हिंदी साहित्य अकादमी कार्यक्रम

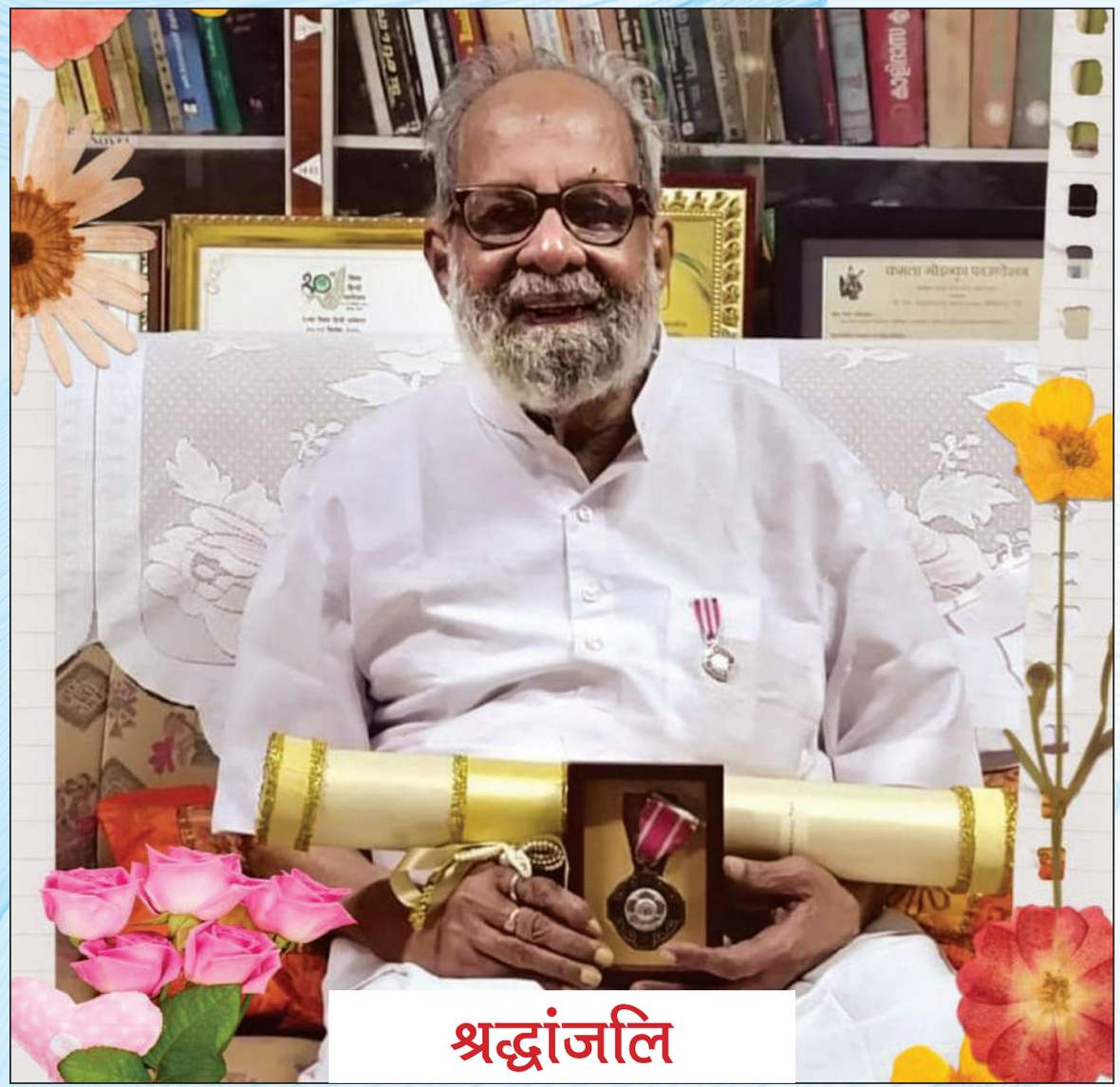

श्रद्धांजलि

पद्मश्री डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर 10–01–2022 को 99 वर्ष की आयु में बहालीन हुए थे। उनकी अंतिम विदाई के दौरान केरल सरकार का "गार्ड ऑफ ऑनर" एवं अन्य साहित्यिक – सांस्कृतिक व्यक्तित्वों से यथोचित श्रद्धांजलियाँ प्राप्त हुई।

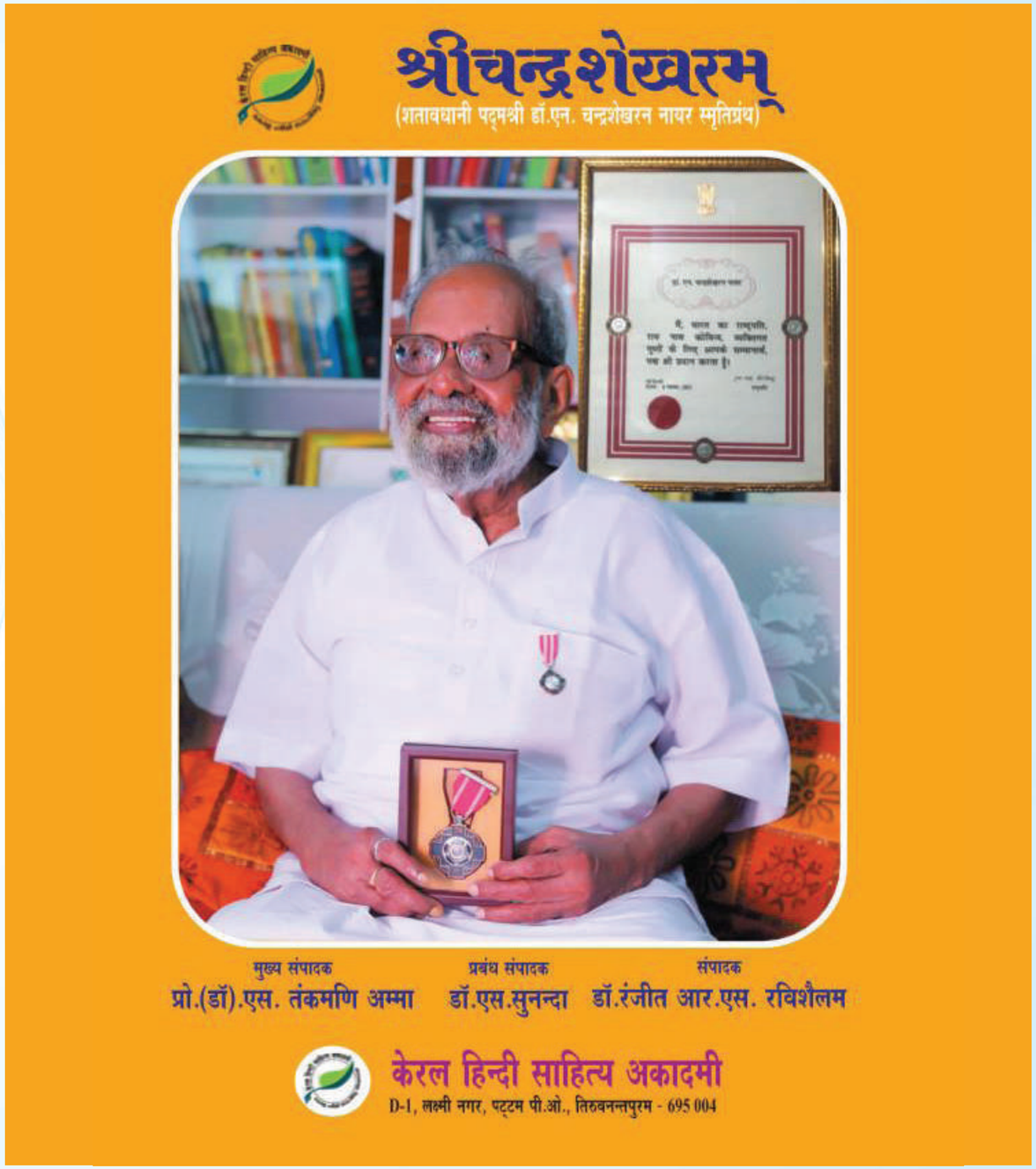

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का ४२ वाँ वार्षिक सम्मेलन, दिवंगत पद्मश्री. डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जन्म शताब्दी समारोह, डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषण पुरस्कार समर्पण समारोह एवं श्रीचन्द्रशेखरम स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण-२८-१२-२०२२

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

डी-०१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५००४

केरल हिंदी साहित्य अकादमी का ४३ वाँ वार्षिक सम्मेलन , दिवंगत पद्मश्री. डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर १०१ वाँ जन्मदिन समारोह, डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषण पुरस्कार समर्पण समारोह-२८-१२-२०२३

संपर्क - डॉ. एस.सुनन्दा (महासचिव)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, डी-१, लक्ष्मी नगर, पट्टम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

Mobile: 8800095639 | E-mail: sarada.sunanda@gmail.com | keralahindisahityacademy@gmail.com

Websites: www.drnchandrasekharannair.in |www.keralahindisahityaacademy.com